राज्य अध्याय 23

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने के लिए प्रार्थना करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	***साझा करना*** *(20 मिनट)* ***(शांत समय)*** **भजन संहिता 50,51,58 व 62**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** (या अपने नोट्स से पढ़ें) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 50,51,58 व 62) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(रोमियों में प्रमुख वचन)*** **(10) रोमियों 6:23**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन*** करें:
(10) रोमियों 6:23। क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।

4	**शिक्षा** *(85 मिनट)* ***(यीशु के दृष्टांत)*** **निर्दयी सेवक**

मत्ती 18:15-35 में निर्दयी सेवक का दृष्टांत
परमेश्वर के राज्य में क्षमा के बारे में हैं।

"एक दृष्टांत" स्वर्गीय अर्थ के साथ एक सांसारिक कहानी है। यह एक सच्ची जीवन कहानी या चित्रण है जिसे आत्मिक सत्य को सिखाने के लिए बनाया गया है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने और लोगों को उनकी स्थिति की वास्तविकता और नवीनिकरण की आवश्यकता के साथ सामना कराने के लिए सामन्य और रोजमर्रा की घटनाओं का उपयोग किया। हम इस दृष्टांत का अध्ययन करने के लिए दृष्टांत अध्ययन के छः दिशानिर्देशों का प्रयोग करेंगे (देखें नियमावली 9, संपूरक 1)।

पढ़े मत्ती 18:15-35

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टांत की कहानी अलंकारिक भाषा में बताई गई है और दृष्टांत का आध्यात्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

इस दृष्टांत की कहानी के तीन भाग हैंः

एक राजा अपने भारी कर्ज को रद्द करके अपने सेवक पर दया दिखाता है। एक राजा अपने नौकरों से हिसाब चुकता करना चाहता था। ये सेवक कोई आम दास नहीं थे, लेकिन उच्च अधिकारी थे सम्भवतः प्रांतीय गर्वनर (स्थानीय शासक, दानिय्येल 6:1-2)। उनका कार्य अपने प्रांतों में शाही करों को इकट्ठा करना और उचित समय पर इस बड़ी रकम को राजा को सौंपना था। एक एक करके इन सेवकों को राजा के सामने बुलाया गया। एक सेवक भुगतान करने में सक्षम नहीं था वह राजा के दस हजार तोड़ों का कर्जदार था! एक तोड़ा छः हजार दीनार के बाराबर था। एक दीनार एक मजदूर द्वारा दिन भर में कामायी जाती थी। एक मजदूर को एक तोड़ा कमाने के लिए लगभग बीस साल तक काम करान पड़ता था! इस प्रकार सेवक पर राजा का यह ऋण बहुत भारी था वह कभी भी राजा को यह ऋण चुका नहीं सकता था! हमें यह नहीं बताया गया की उस पर यह भारी ऋण क्यों बकाया था। हो सकता है कि वह करों को इकट्ठा करने में असफल रहा हो, या उसे सुरक्षित रखने में असफल रहा हो या फिर उसने अपने स्वयं के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उसे खर्च कर दिया हो। महत्वपूर्ण बात यह है कि <u>उसका कर्ज चुकाना बिल्कुल असंभव था!</u>

राजा ने आज्ञा दी कि कर्ज का एक छोटा सा हिस्सा चुकाने के लिए उसे और उसके पूरे परिवार को गुलामी में बेच दिया जाए। जो लोग अपना ऋण चुकाने में असमर्थ थे उन्हें बेचने का कार्य इस्त्राएल में अनुमोदित नहीं था, लेकिन यह इस्त्राएल के पड़ोसी देशों में यह आम और प्रसिद्ध कार्य था।

सेवक राजा के चरणों में गिर गया और दया की भीख माँगने लगा। उसने इस बात से इंकार नहीं किया कि उस पर यह भारी ऋण बकाया है। उसने यह समझाने की भी कोशिश नहीं की कि वह इस कठिन परिस्थिति में कैसे पड़ा। उसे यह एहसाह अवश्य हुआ होगा की यह भारी ऋण चुकाना असंभव है, और फिर भी उसने धैर्य रखने का निवेदन किया और सारा ऋण चुकाने का वादा किया! उसने भयानक दंड से बचने की उम्मीद में यह बात कही।

राजा को उस पर दया आ गई। अपार करूणा के कारण राजा ने उसका सम्पूर्ण ऋण रद्द कर दिया और उसे जाने दिया! जितना उसने माँगा या अपेक्षा की थी उससे बढ़कर राजा से उसके लिए किया! दृष्टांत का पहला भाग राजा की अकल्पनीय और निश्चित रूप से अवांछित दया और करूणा को दर्शाता है।

वह सेवक अपने साथी सेवक का थोड़ा सा ऋण क्षमा करने से इंकार कर देता है। बाहर, वह अपने एक साथी सेवक से मिलता है जिस पर उसका सौ दीनार का ऋण था। उसके स्वयं के बड़े ऋण की तुलना में यह रकम बहुत ही कम थी। सौ दीनार लगभग तीन महिने की मजदूरी के बाराबर थी! इससे पहले की उसका साथी सेवक कुछ कह पाता, उसने उसका गला पकड़कर घोंटा। उसने तुरंत ऋण

चुकाने की मांग की। कहानी हमें यह नहीं बताती की क्यों उसने इतना निर्दयी व्यवहार किया। हो सकता है कि उसके घमंड को पहुँची ठेस और दूसरों की दृष्टि में भले भंड़ारी होने की असफलता के कारण गहन अपमान ने उसे यह इच्छा प्रदान की हो कि वह सबसे पहले मिलने वाले व्यक्ति से अपने इस अपमान का बदला ले।

उसका साथी सेवक भी उसके चरणों में गिर पड़ा और दया की भीख माँगता रहा। यह सेवक अपने कर्ज के विषय में यर्थातवादी था। निर्दयी सेवक के समान, उसने सब कुछ चुका देने का वादा नहीं किया, लेकिन बस पैसे चुकाने का वादा किया। लेकिन निर्दयी सेवक ने उसकी बात न मानी और उसे बंदीगृह में डाल दिया। क्योंकि उसके साथी सेवक का कर्ज बहुत थोड़ा था इसलिए कानूनी रूप से उसे गुलामी में बेचने की अनुमति नहीं थी, लेकिन कानूनी रूप से यह अनुमति थी की उसे बंदीगृह में डाल दिया जाए और उसे तब तक मजदूरी करने के लिए विवश किया जाए जब तक कि वह अपना सार ऋण न चुका दे। ऐसे लोगों को बंदीगृह में डालना और यहाँ तक कि उन्हें यातना देना आम बात थी यह पता लगाने के लिए कि उन्हेंने अपने धन को कहाँ छिपा रखा है या उनके रिश्तेदारों और मित्रों को कर्ज चुकाने के लिए प्रेरित किया जात था। दृष्टांत का दूसरा भाग उस सेवक की क्रूरता को दर्शाता है जिसे क्षमा कर दिया गया था, लेकिन वह निर्दयी बना रहा।

राजा ने निर्दयी सेवक के पूर्व दंड को फिर से लागू कर दिया, और यहाँ तक कि इस और बदतर बना दिया। जब अन्य सेवकों ने निर्दयी सेवक की क्रूरता देखी, तब उन्होंने जा कर सब कुछ राजा को बता दिया। राज ने उस सेवक को बुलवाय जिसे उसने क्षमा कर दिया था और उस पर दुष्ट सेवक, एक बदमाश होने का आरोप लगाया। निर्दयी और क्रूर सेवक को अपने साथी सेवक के प्रति दया दिखानी चाहिए थी *जिस प्रकार राजा से उसके प्रति दया दिखाई थी।* यह उसका कर्तव्य था कि न सिर्फ राजा की दया के प्रति आभारी रहे, वरन अपने चाल चलन में अपने साथियों के साथ राजा के उदाहरण का अनुसरण भी करे। यह उसका स्थायी दायित्व था कि वह उन सभी को क्षमा करे जिन्होंने उसके कुछ भी गलत किया था। राजा ने क्रोध में आकर इस निर्दयी सेवक को दंड देने वालों के हाथ में सौंप दिया जब तक कि वह सब कुछ न भर दे जो कुछ उस पर बकाया था।

2.तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टांत की ''कहानी'' के संदर्भ में दृष्टांत का ''समायोजन'' और ''स्पष्टीकरण या लागूकरण'' शामिल हो सकता है। दृष्टांत का *समायोजन* दृष्टांत को बताने के अवसर या दृष्टांत को बताने के समय की *परिस्थितियों* के विषय में बता सकता है। समायोजन आमतौर पर दृष्टांत की काहनी से *पहले* और स्पष्टीकरण या लागूकरण आमतौर पर दृष्टांत की काहनी के *बाद* पाया जाता है।
खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती 18:15-22 में पाया जाता है।

अनुशासन का नियम। मत्ती 18:15-17, में यीशु ने अपने चेलों को सिखाया कि उन्हें उस भाई से साथ मेल मिलाप के लिए पहल करनी चाहिए जिसने उनके विरूद्ध पाप किया हो। हालाँकि, ये शब्द, ''तेरे विरूद्ध'' प्राचीन हस्तलेखों में नहीं पाए जाते (लूका 17:3-4), वे लागू होते हैं क्योंकि गलती करने वाले भाई से साथ बातचीत ''केवल आप दोनों के बीच होनी थी''। साथ ही वचन 21 में पतरस

के प्रश्न का तात्पर्य अधिक निजी प्रकृति के पाप से है। फिर भी, जब भी कलीसिया के हितों की मांग करें या इसे अनुमति दें, तो मत्ती 18:15 का नियम लागू होना चाहिए, केवल व्यक्तिगत पाप नहीं, लेकिन सार्वजनिक पाप के लिए भी।

क्षमा का प्रश्न। हालाँकि पतरस ने महसूस किया कि एक मसीही को एक पूर्ण मेल मिलाप के लिए *पहल करनी चाहिए,* वह जानना चाहता था कि *कितनी बार* एक मसीही को गलती करने वाले अपने भाई के प्रति दया दिखानी चाहिए (मत्ती 18:21-22)। आत्मिक ममलों को देखने का यह दृष्टिकोण और बहस करने का यह तरीका व्यवस्था के यहूदी शिक्षकों के समान जान पड़ता है। वे सिखाते थे कि पहले, दूसरे और तीसरे अपमान को क्षमा कर देना चाहिए, लेकिन चौथे अपमान को दंडित करना चाहिए! यह ऐसा सुनाई पड़ता है कि मानों ''क्षमा'' एक सामग्री है जिसे मापा जा सकता है या इसमे फेर-बदल की जा सकती है; जैसे कि इसे थोड़ा-थोड़ा करके बाहर निकाला जा सकता हो जब तक कि यह एक निश्चित मापदंड तक न पहुँच जाए, जिसके परे एक व्यक्ति को क्षमा नहीं किया जा सकता! पतरस का प्रश्न क्षमा करने की *सीमा* पर था, और वह स्वयं यह सोचता था कि ''सात बार'' बहुत ही पर्याप्त था!

हालाँकि, यीशु ने उत्तर दिया कि क्षमा किसी प्रकार की सामग्री नहीं थी और साथ ही इसे मापने योग्य मात्रा में व्यक्त नहीं किया जा सकता था। क्षमा करना उन लोगों के प्रति एक व्यवहार है जिन्होंने आपके साथ कुछ गलत किया है। उन्होंने यह भी कहा कि एक व्यक्ति को अपने गलती करने वाले भाई को ''सात के सत्तर गुने तक'' क्षमा करना चाहिए! उनके कहने का शाब्दिक अर्थ 490 बार नहीं था। वह *समयों की सही संख्या से परे कुछ* इंगित करने के लिए यहूदियों के अंलकारिक अंक शास्त्र का प्रयोग कर रहे हैं। दो संपूर्ण अंको ''7'' और ''10'' को एक और संपूर्ण अंक ''7'' से गुणा करने के द्वारा, यीशु ने यह दर्शाने के इरादा किया कि <u>वास्तविक क्षमा सीमाओं को या एक निश्चित सीमा को मान्यता नहीं देती</u>। क्षमा हृदय की दशा है, गणना का मुद्दा नहीं।

इस अवसर पर यीशु ने निर्दयी सेवक का दृष्टांत कहा।

(2) इस दृष्टांत की कहानी मत्ती 18:23-34 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत का स्पष्टीकरण या लागूकरण मत्ती 18:35 में निहित है।

''इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा।''

---

3. <u>दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।</u>

परिचय। यीशु ने दृष्टांत की कहानी में हर एक विवरण का इरादा कुछ विशेष आत्मिक महत्व समझाने के लिए नहीं किया था। प्रासंगिक विवरण दृष्टांत की कहानी में वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए हमें दृष्टांत की कहानी के हर एक विवरण को विशेष मनमाना आत्मिक श्रेय नहीं देना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें।

यीशु इस दृष्टांत की कहानी के किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते। इसलिए, प्रासंगिक विवरण संदर्भ या बाइबल के अन्य भागों से लिया जाना चाहिए।

राजा और उसके दो सेवक। मत्ती 18:35 में, अपने लागूकरण में यीशु, केंद्रीय बिंदु को परमेश्वर, मसीही और उनके दोषि भाईयों पर लागू करते हैं। केवल यही पहलू प्रासंगिक हैं। वह कहते हैं, ''इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा।'' ''राजा की करूणा और दया'' परमेश्वर की दया का प्रतिनिधित्व करती है। ''सेवक की दया और करूणा'', जो उसे अपने साथी सेवक पर दिखानी चाहिये थी, वह उस क्षमा का प्रतिनिधित्व करती है जो एक मसीही को अपने अपराधी भाई को देनी चाहिए।

दस हजार तोड़े और सौ दीनार। ''10000 तोड़ो'' की भारी रकम परमेश्वर के विरोध में एक व्यक्ति द्वारा किए गए विशाल पापों के ऋण (दोष) का प्रतिनिधित्व करता है! स्वभाव से ही हर एक मनुष्य का पमेश्वर के प्रति यह भारी ऋण है। यह रकम इतनी बड़ी है कि इसे दर्शाने के लिए कोई भी व्यक्ति इस ऋण को परमेश्वर को नहीं चुका सकता! अपने स्वंय के पापों के कारण यह ऋण अपने स्वयं के तरीके से परमेश्वर को चुकाना मानवीय रूप से असम्भव है! केवल परमेश्वर ही इतना बड़ा अपराध क्षमा कर सकते हैं!

''100 दीनार'' की छोटी रकम पहले मसीही के विरूद्ध दूसरे मसीही के ऋण का प्रतिनिधित्व करती है। यह रकम अभी भी अच्छी मात्रा में है (तीन महिने की मजदूरी के बराबर), लेकिन इस ऋण को मनुष्य द्वारा चुकाना संभव है! एक मसीही हमेशा उन छोटे पापों को क्षमा करने में सक्षम है जो उसके विरूद्ध दूसरे मसीही ने किए हैं!

यह दो धन राशियाँ विशिष्ट पापों का और विशिष्ट मात्राओं का भी प्रतिनिधित्व नहीं करती। यह केवल एक बड़ी अकल्पनीय रकम की तुलना में एक छोटी धन राशि का प्रतिनिधित्व करती हैं।

दण्ड देने वाले जो यातना देते हैं। इन विवरणों को कोई विशिष्ट अर्थ नहीं दिया गया, लेकिन यह अंतिम न्याय का प्रतिनिधित्व करते हैं, जब प्रत्येक व्यक्ति वह प्राप्त करेगा जो उस पर बकाया है। ''क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले भुरे कामों का बदला जो उसने दे हके द्वारा किए हों पाए'' (2कुरिन्थियों 5:10)।

इस दृष्टांत की कहानी के अन्य सभी विवरणों को कोई विशेष अर्थ नहीं दिया जाना चाहिए। वे सब दृष्टांत की कहानी को मजबूती प्रादन करने का काम करते हैं।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय। दृष्टांत का मुख्य संदेश (केंद्रीय विषयवस्तु) या तो स्पष्टीकरण या लागूकरण में पाया जाता है या फिर स्वयं कहानी में। जिस प्रकार यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांतों को समझाया या लागू किया, हम जानते हैं कि हमें दृष्टांतों की व्याख्या किस प्रकार करनी चाहिए। एक दृष्टांत में समान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ, स्थापित करने के लिए एक केंद्रीय बिंदु होता है। इसलिए हमें कहानी के हर एक

विवरण में आत्मिक सत्य को खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, लेकिन इसके बजाय हमें एक मुख्य पाठ को देखना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 18:23-35 में निर्दयी सेवक का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में क्षमा" के बारे में है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "मनुष्य की क्षमा और अलौकिक क्षमा में एक सीधा संबंध है। अर्थात, जो क्षमा हम परमेश्वर से प्राप्त करते हैं और जो क्षमा हम उस व्यक्ति को देते हैं जो हमारे विरूद्ध पाप करता है, उसमें सीधा संबंध है। एक मसीही, जिसके पाप क्षमा किए गए हैं, उसे सदैव उन उन्हें क्षमा करने के लिए तैयार रहना चाहिए जिसने भी उसके विरोध में पाप किया हो।"

उसे ऐसा केवल यह आभार व्यक्त करने के लिए नहीं करना चाहिए कि परमेश्वर ने उसके पापों को क्षमा किया है, लेकिन साथ ही इसलिए भी कि परमेश्वर मांग करते हैं कि वह परमेश्वर का अनुसरण करे और दूसरों के साथ वही करे जो परमेश्वर ने उसके साथ किया। क्योंकि परमेश्वर ने एक मसीही को क्षमा किया है, एक मसीही को भी उन सभी को क्षमा करना चाहिए जिन्होंने उसके विरूद्ध कोई अपराध किया हो! एक मसीही को अपने अधिकारों के दावों को छोड़ देना चाहिए और अनुग्रह को अधिकारों के ऊपर विजयी होने देना चाहिए! *सच्चा प्रेम प्राकृतिक स्व-प्रेम के बहिष्कार की मांग करता है!*

क्षमा परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के लोगों को आपने अपराधी भाईयों के प्रति निर्दयी या क्रूर नहीं होना चाहिए, लेकिन उनके अपराधों के लिए उन्हें लागातार क्षमा करते रहना चाहिए (मत्ती 6:12,14-15)।

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

परिचय। कुछ दृष्टांत एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सत्य, बाइबल के अन्य लेखांशों में सिखाए गए सत्य के समानांतर या विपरीत हो सकता है। सबसे महत्वपूर्ण विपरीत संदर्भ को खोजने की कोशिश करें जिससे दृष्टांत की व्याख्या करने में हमारी सहायता हो। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टांत की व्याख्या की जाँच करें।

(1) मुद्दई का दृष्टांत।

पढ़ें मत्ती 5:25-26।

खोजें और चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में क्षमा के विषय पर इन दो दृष्टांतों की तुलना कैसे करें?

ध्यान दें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "अपने मुद्दई के साथ मेल मिलाप का समय सदैव अभी है!"

क्षमा परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग उस भाई या बहन के साथ जिससे वे क्रोधित हैं, मेल मिलाप करने को कभी टालते नहीं, *क्योंकि "कल" शायद बहुत देर हो सकती है!* वह व्यक्ति जो मेल मिलाप करने का प्रयास करने से इंकार करता है, वह कभी अपना ऋण नहीं चुका पाएगा।

जबकि ''निर्दयी सेवका का दृष्टांत'' सिखाता है कि परमेश्वर के साथ मेल मिलान करने के लिए एक अपराधी भाई या बहन के साथ मेल मिलाप करना निश्चित रूप से आवश्यक और अनिर्वाय है, वहीं ''मुद्दई का दृष्टांत'' सिखाता है कि ऐसे मेल मिलाप को करने में देरी नहीं हो सकती!

(2) गुलामी और यातना।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल गुलामी और यातना के बारे में क्या सिखाती है?

ध्यान दें।

किसी को गुलामी में बेचने की प्रथा। पढ़े निर्गमन 22:3; लैव्यव्यवस्था 25:8-10,39-43; 2राजा 4:1; नहेम्याह 5:4-6; यशायाह 50:1; आमोस 2:6; 8:6। निर्गमन 22 के अनुसार एक व्यक्ति को गुलामी में बेचने की अनुमति केवल एक चोर या डाकू के मामले थी। लैव्यव्यवस्था 25 के अनुसार, गुलामी में बेचे गए एक इस्त्राएली के साथ एक दास के समान नहीं परन्तु एक अस्थायी किराए के मजदूर के समान व्यवहार किया जाना चाहिए और उसे जुबली के वर्ष में स्वतंत्र किया जाना चाहिए। 2राजा 4 में गुलामी को मंजूरी नहीं दी गई है, केवल इसकी सूचना दी गई है। बाद में, नहेम्याह 5 में ऋण के लिए गुलामी की निंदा की गई है।

यशायाह 50 के अनुसार, प्रभु ने दो चित्रों के माध्यम से कहा कि उन्होंने इस्त्राएल को बेबीलोन की गुलामी या दासत्व में नहीं भेजा, लेकिन इस्त्राएल स्वयं दासत्व या गुलामी का कारण था। परमेश्वर ने इस्त्राएल को एक तलाक पत्र नहीं दिया, जिससे यह सिद्ध होता है कि परमेश्वर ने इस्त्राएल को त्याग दिया। परमेश्वर ने *इस्त्राएल को गुलामी में नहीं बेचा।* तथ्य यह है कि इस्त्राएल अपने स्वयं के पापों के कारण त्यागा गया और गुलामी में बेच दिया गया!

भविष्यद्वक्ता आमोस के अनुसार, परमेश्वर ने लोगों को गुलामी में बेचने की निंदा की! निष्कर्ष यह है कि लोगों को गुलामी में बेचने की प्रथा को अनाधिकृत तरीके से स्वीकृति नहीं दी गई थी। इस्त्राएल से बाहर के देशों में जो लोग अपना ऋण नहीं चुका पाते थे उन्हे बेचना आम था। निर्दयी सेवक का दृष्टांत इसी प्रथा को संदर्भित करता है।

यातना देने की प्रथा। पढ़ें प्रकाशितवाक्य 9:5; 18:6-7। मत्ती 18:34 कहता है कि, ''और उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दंड देनेवालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्ज न भर दे, तब तक उनके हाथ में रहे''। प्राचीन मध्य पूर्व में ये दंड देने वाले अधिकारी न्यायालय द्वारा उन लोगों को दंड देने के लिए नियुक्त किए गए थे जिन्होंने भयानक अपराध किए हों। फिर से, बाइबल याताना देने की स्वीकृति नहीं देती, लेकिन केवल सूचना देती है कि संसार के इस भाग में ऐसा हुआ। यह यीशु की शिक्षा का हिस्सा नहीं था, लेकिन यीशु की ''कहानी'' का एक भाग था।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, परमेश्वर अपने पवित्र क्रोध को बाहर निकालने वाले साधनों को बेबीलोन के अपवित्र नगर के विरूद्ध आज्ञा देते हैं कि जो कुछ भी उसने दूसरों के साथ किया है उसका पूरा बदला लिया जाए। वह ऐसा अंलकारिक भाषा में करते हैं। वह यह स्पष्ट नहीं करते कि दंड देने के यह साधन कौन हैं। वे हर एक जन और हर वह चीज है जिसका प्रयोग परमेश्वर अपने न्याय को प्रगट करने के लिए करते हैं।

''दो गुना भुगतान'' का अर्थ है ''उसे पूर्ण समकक्ष'' दंड देना जिसकी वह हकदार है। क्योंकि बेबीलोन के पापों के लिए कोई पश्चयाताप नहीं है, ''उसके पाप'' और ''उसके पापों के अनुसार दंड'' दोनों समान अनुपापत में हैं और दो ऐसे आधे हिस्से हैं जो मिलकर एक पूर्ण भाग हो जाता हैं, इसलिए पूर्ण रूप से उचित है! दूसरों के प्रति उसके कामों में क्रूरता और निर्दयी यातनाएँ और लोगों की हत्या शामिल थी। वह दूसरों के लिए अकल्पनीय दुःख का कारण थी। परमेश्वर के न्याय में वह अपना उचित दंड प्राप्त करेगी!

(3) क्षमा के विषय में शिक्षाएँ।

खोजें और चर्चा करें। ये लेखांश जो कुछ सिखाते हैं, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है?

ध्यान दें।

रोमियों 3:23। ''इसलिए सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं''। *पृथ्वी पर सभी लोग कर्जदार हैं और सबको परमेश्वर की क्षमा की आवश्यकता है!* (भजन 130:3-4; मत्ती 18:23)

भजन 49:7। ''उनमें से कोई अपने भाई को किसी भाँति छुड़ा नहीं सकता और न परमेश्वर को उसके बदले कुछ दे सकता है - क्योंकि उनके प्राण की छुड़ौती भारी है वह अंत तक कभी न चुका सकेंगे।'' *कोई भी किसी दूसरे की ओर से ऋण नहीं चुका सकता।* (मत्ती 18:25; रोमियों 3:20)

रोमियों 3:19। हर एक मुँह बंद किया जाए और सारा संसार परमेश्वर के दंड के योग्य ठहरे। परमेश्वर के ऋण का भुगतान दूसरे तरीके से होना चाहिए! (मत्ती 18:23-24; उत्पत्ति 2:17; रोमियों 5:18)।

रोमियों 3:24। परमेश्वर के अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में हैं सभी विश्वासी सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। वह पापों के लिए प्रायश्चित का माध्यम ठहरा। इसका अर्थ है कि जिस क्षण एक व्यक्ति यीशु मसीह में विश्वास करता है, यीशु मसीह उसके पापों के लिए प्रायश्चित बलिदान बना जाते हैं और उसके पापों का दोष रद्द हो जाता है (मत्ती 18:27; 20:28; 2कुरिन्थियों 5:21)। 2कुरिन्थियों 9:15 ''परमेश्वर का उसके उस दान के लिए धन्यवाद हो जो वर्णन से बाहर है!'' किसी दूसरे व्यक्ति को जिसने आपके विरूद्ध अपराध किया है, क्षमा करना बहुत कठिन नहीं होना चाहिए, क्योंकि जो परमेश्वर का हम पर बकाया है, वह उससे कहीं अधिक है जो हमारा दूसरों पर बकाया है!

मत्ती 6:12-15। ''इसलिए यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।'' यह सिखात है कि एक व्यक्ति अपने ऋण या पापों के क्षमा होने के प्रति तभी सुनिश्चित हो सकता है जब वह स्वयं दूसरों के ऋण को क्षमा करता है जिन्होंने उसके विरूद्ध अपराध किया हो। क्षमा की गारंटी तभी संभव है जब एक व्यक्ति उन लोगों को क्षमा करता है जिन्होंने उसके विरूद्ध पाप किया हो। परमेश्वर निश्चित रूप से ऐसे व्यक्ति को क्षमा नहीं करेंगे, जो घृणा या प्रतिशोध को थामे रखता है! मसीहियों को दूसरों को वैसे ही क्षमा करना चाहिए जैसे परमेश्वर ने उन्हें क्षमा किया है। लेकिन यदि वे अपने विरोध में दूसरों के पापों को क्षमा नहीं करेंगे, तो परमेश्वर भी अपने विरोध में उनके पापों को क्षमा नहीं करेंगे। परमेश्वर ऐसे व्यक्ति को क्षमा नहीं

करते जो दूसरों को क्षमा करने से इंकार करता है (मत्ती 18:32-34; इफिसियों 4:32; कुलुस्सियों 3:12-14)!

मत्ती 5:23-24; 18:17। मेल मिलाप करने की ओर पहला कदम किसे बढ़ाना चाहिएः वह व्यक्ति जिसने चोट पहुँचाई या वह व्यक्ति जिसने चोट का सामना किया? यीशु का उत्तर है, "दोनों!" मत्ती 5:23-24 कहता है "इसलिए यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहाँ तू स्मरण करे, कि तेरे भाई के मन में तेरे लिए कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे, और जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर, और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।" यहाँ यीशु सिखाते हैं कि *दोषी व्यक्ति को पहल करनी चाहिए।*

मत्ती 18:15 कहता है, "यदि तेरा भाई तेरे विरूद्ध अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा।" यहाँ यीशु सिखाते हैं कि *निर्दोष व्यक्ति को पहल करनी चाहिए।*

परमेश्वर की दृष्टि में यह महत्वपूर्ण नहीं है कि समस्या की शुरूआत किसने की, लेकिन यह कि मेल मिलाप हो! परमेश्वर दोनों पक्षों को मेल मिलाप की दिशा में पहल करने के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं।

---

6. परमेश्वर के राज्य में क्षमा के विषय पर इन दृष्टांतों की मुख्य शिक्षाओं या पाठों का सांराश।

(1) परमेश्वर कैसे हैं।

सभी लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर कैसे हैं। इन दृष्टांतों का एक बड़ा सबक यह है कि वे परमेश्वर की अकल्पनीय दयालु और क्षमा करने वाली आत्मा को दर्शाते हैं। परमेश्वर की दृष्टि में हमारे पापों की तुलना दस हजार तोड़ों के भारी ऋण से की जा सकती है, एक ऐसा ऋण जिसे कोई भी कभी भी परमेश्वर को नहीं चुका सकता! जबकि अपने पापों के कारण, परमेश्वर का जो ऋण हमारे ऊपर बकाया है, उसे हम में से कोई भी नहीं चुका सकता, यीशु मसीह ने सभी के ऋण को चुकाया है जो उस पर विश्वास करते हैं! वह क्रूस पर उन सभी लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिए मरा जो उसे स्वीकार करते (यूहन्ना 1:12), और उन सभी लोगों के लिए जो उसके हैं (यूहन्ना 10:11)! "जो कोई भी प्रभु (यीशु मसीह) का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा" (रोमियों 10:13)।

(2) मसीहियों को कैसा होना चाहिए।

मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें कैसा होना चाहिए। दूसरा जो मुख्य पाठ यह दृष्टांत हमें सिखाते हैं वह यह है कि परमेश्वर हमसे क्या चाहते हैं कि हम बनें और करें। यह सिखाता है कि हमें हर उस व्यक्ति के पास जाना चाहिए और मेल मिलाप करना चाहिए जिसके प्रति हमारे मन में कोई शिकायत है या जिनके मन में हमारे प्रति कोई शिकायात है! यह सिखाता है कि हमें क्षमा करने और मेल मिलाप करने में देरी नहीं करनी चाहिए। हमें अभी क्षमा करना है, और तुरन्त मेल मिलाप करना है, क्योंकि *"कल" शायद बहुत देर हो सकती है!* क्षमा करना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है! परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग न तो किसी के विरूद्ध कड़वाहट को थामे रखते हैं, न ही अपने विरोध में दूसरों के पापों का लेखा रखते हैं, लेकिन तुरन्त क्षमा करने के लिए पहल करते हैं और मेल मिलाप करते हैं (1कुरिन्थियों 13:5)। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक

लोगों को अपराध करने वाले भाई के प्रति निर्दयी या क्रूर नहीं होना चाहिए, लेकिन उनके अपराधों को बार बार लगातार क्षमा करना चाहिए (मत्ती 6:12, 14-15)।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *(प्रतिक्रियाएँ)* **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थनाकरने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *(निर्धारित कार्य)* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "बोने वाले के दृष्टांत" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **भजन संहिता 71,73,78 और 82** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(6) रोमियों 4:5, (7) रोमियों 5:1-2अ, (8) रोमियों 5:3-4, (9) रोमियों 6:13, (10) रोमियों 6:23।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 6:12-23।** बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।